

सकलभुवनसारं दत्तसंसारपारं दुरितशतनिवारं यस्य वाक्यं सुतारम्।
 स सृजतु जिनदेवो देवदेवेन्द्रवन्द्यो निजचरणसुसेवां मुक्तिपर्यन्तमुच्चैः ॥१८॥
 इति कथाकोशे शुभनृपस्याख्यानं समाप्तम्।

७८. सुदृष्टेराख्यानम्

नत्वा जगत्त्रयाधीशैः पूजितं श्रीजिनेश्वरम्। वक्ष्ये सुदृष्टिसन्नामरत्नविज्ञानिवृत्तकम् ॥१॥
 उज्जयिन्यां महाराजः प्रजापालः प्रजाहितः। श्रीमज्जिनेन्द्रपादाब्जसेवनैकमधुव्रतः ॥२॥
 राज्ञी च सुप्रभा तस्य सती सद्रूपमण्डिता। तदेव भुवने भाति रूपं यच्छीलसंयुतम् ॥३॥
 तत्रैव पत्तने जातो रत्नविज्ञानिको महान्। सुदृष्टिर्नामतस्तस्य भार्याभूद्विमला कुधीः ॥४॥

वे मरकर कीड़ा होंगे, सो भी विष्टा में। उसका उन्हें खेद था और इसलिए उन्होंने तुमसे उस अवस्था में मार डालने को कहा था। पर अब उन्हें वही जगह अत्यन्त प्यारी हैं, वे मरना पसन्द नहीं करते। इसलिए जब तुम उस कीड़ा को मारने जाते हो तब वह भीतर घुस जाता है। इसमें आश्चर्य और खेद करने की कोई बात नहीं। संसार की स्थिति ही ऐसी है। मुनिराज द्वारा यह मार्मिक उपदेश सुनकर देवरति को बड़ा वैराग्य हुआ। वह संसार छोड़कर, इसलिए कि उसमें सार कुछ नहीं है, मुनिपद स्वीकार कर आत्महित साधक योगी हो गया। जिनके वचन पापों के नाश करने वाले हैं, सर्वोत्तम हैं और संसार का भ्रमण मिटाने वाले हैं, वे देवों द्वारा, पूजे जाने वाले जिन भगवान् मुझे तब तक अपने चरणों को सेवा का अधिकार दें जब तक कि मैं कर्मों का नाश कर मुक्ति प्राप्त न कर लूँ ॥१७-१८॥

७८. सुदृष्टि सुनार की कथा

देवों, विद्याधरों, राजाओं और महाराजाओं द्वारा पूजा किए जाने वाले जिन भगवान् को नमस्कार कर सुदृष्टि नामक सुनार की, जो रत्नों के काम में बड़ा होशियार था, कथा लिखी जाती है ॥१॥

उज्जैन के राजा प्रजापाल बड़े प्रजाहितैषी, धर्मात्मा और भगवान् के सच्चे भक्त थे। उनकी रानी का नाम सुप्रभा था। सुप्रभा बड़ी सुन्दरी और सती थी। सच है—संसार में वही रूप और वही सौन्दर्य प्रशंसा के लायक होता है जो शील से भूषित हो ॥२-३॥

यहाँ एक सुदृष्टि नाम का सुनार रहता था। जवाहरात के काम में यह बड़ा चतुर था तथा सदाचारी और सरल-स्वभावी था। इसकी स्त्री का नाम विमला था, विमला दुराचारिणी थी। अपने घर में रहने वाले एक वक्र नाम के विद्यार्थी से, जिसे कि सुदृष्टि अपने खर्च से लिखाता-पढ़ाता था, विमला का अनुचित सम्बन्ध था। विमला अपने स्वामी से बहुत नाखुश थी। इसलिए उसने अपने प्रेमी वक्र को उसका कर, उसे कुछ भली-बुरी सुझाकर सुदृष्टि का खून करवा दिया। खून उस समय किया गया जब कि सुदृष्टि विषय-सेवन में मग्न था। सो यह मरकर विमला के ही गर्भ में

वक्राख्यो दुष्टधीस्तस्या गृहे छात्रः प्रवर्तते। तेन सार्द्धं दुराचारं सा करोति स्म पापिना ॥५॥
 एकदा विमलायाश्च वाक्यतः सोपि वक्रकः। सुदृष्टिं मारयामास कुर्वन्तं कामसेवनम् ॥६॥
 स्ववीर्येण समं तत्र सुदृष्टिः कर्मयोगतः। मृत्वासौ विमलागर्भे पुत्रोभूत्कतिचिद्विनैः ॥७॥
 अहो संसारिणो जीवाः स्वकर्मवशवर्तिनः। नाना रूपं प्रयान्त्युच्चैर्नटाचार्यो यथा भुवि ॥८॥
 अथैकदा महोद्याने चैत्रमासे मनोहरे। सुप्रभाया महाराज्ञ्याः क्रीडन्त्या भूभुजा समम् ॥९॥
 कण्ठस्थितो महाहारो नाम्ना क्रीडाविलासकः। त्रुटितः प्रोल्लसत्कान्तिमण्डितो रचनान्वितः ॥१०॥
 केनापि स्वर्णकारेण न हारो रचितस्तथा। सारपुण्यं विना केन सद्विज्ञानं हि लभ्यते ॥११॥
 तं हारं च समालोक्य तदा स विमलासुतः। भूत्वा जातिस्मरो धीमान्चयामास पूर्ववत् ॥१२॥
 ज्ञानविज्ञानसद्धानं पूजनं श्रीजिनेशिनाम्। पूर्वाभ्यासेन जन्तूनां समायाति स्वपुण्यतः ॥१३॥
 प्रजापालो नृपः प्राह तदा सन्तुष्टमानसः। सुदृष्टेर्निर्मितो हारः कथं भो रचितस्त्वया ॥१४॥
 तच्छ्रुत्वा स जगादेवं भो नरेन्द्र महामते। अहमेव भवाम्यत्र सुदृष्टिः परमार्थतः ॥१५॥
 पूर्ववृत्तान्तमाकर्ण्य स राजा जैनतत्त्ववित्। ज्ञात्वा संसारवैचित्र्यं मुनिर्जातो गुणोज्ज्वलः ॥१६॥

आया। विमला ने कुछ दिनों बाद पुत्र प्रसव किया। आचार्य कहते हैं कि संसार की स्थिति बड़ी ही विचित्र है जो पल भर में कर्मों की पराधीनता से जीवों का अजब परिवर्तन हो जाता है। वे नट की तरह क्षणक्षण में रूप बदला ही करते हैं ॥४-८॥

चैत का महीना था वसन्त शोभा ने सब ओर अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा था। वन उपवनों की शोभा मन को मोह लेती थी। इसी सुन्दर समय में एक दिन महारानी सुप्रभा अपने खास बगीचे में प्राणनाथ के साथ हँसी विनोद कर रही थी। इसी हँसी-विनोद में उसका क्रीड़ा-विलास नाम का सुन्दर बहुमूल्य हार टूट पड़ा। उसके सब रत्न बिखर गए। राजा ने उसे फिर वैसा ही बनवाने का बहुत यत्न किया, जगह-जगह से अच्छे सुनार बुलवाए पर हार पहले सा किसी से नहीं बना। सच है-बिना पुण्य के कोई उत्तम कला या ज्ञान नहीं होता। इसी टूटे हुए हार को विमला के लड़के ने अर्थात् पूर्वभव के उसके पति सुदृष्टि ने देखा। देखते ही उसे जातिस्मरण पूर्व जन्म का ज्ञान हो गया। उससे उसने इस हार को पहले-जैसा ही बना दिया। इसका कारण यह था कि इस हार को पहले भी सुदृष्टि ने ही बनाया था और यह बात सच है कि इस जीव को पूर्व जन्म के संस्कार पुण्य से ही कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान दान-पूजा आदि सभी बातें प्राप्त हुआ करती हैं। प्रजापाल उसकी ऐसी होशियारी देखकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उससे पूछा भी कि भाई, यह हार जैसा सुदृष्टि का बनाया था वैसा ही तुमने कैसे बना दिया? तब वह विमला का लड़का मुँह नीचा कर बोला- राजाधिराज, मैं अपनी कथा आपसे क्या कहूँ। आप यह समझें कि वास्तव में मैं ही सुदृष्टि हूँ। इसके बाद उसने बीती हुई सब घटना राजा से कह सुनाई। वे संसार की इस विचित्रता को सुनकर विषय-भोगों से बड़े विरक्त हुए। उन्होंने उसी समय सब माया-जाल छोड़कर आत्महित का पथ जिनदीक्षा ग्रहण कर ली ॥९-१६॥

त्रिधा वैराग्यमासाद्य सोऽपि श्रीविमलासुतः। दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं स्वर्गमोक्षसुखप्रदाम् ॥१७॥
 मुनिर्भूत्वा विशुद्धात्मा तपः कुर्वन्मनोहरम्। भव्यान्सम्बोधयन्नुच्चैर्विहरंश्च महीतले ॥१८॥
 सौरीपुरोत्तरे भागे यमुनाया लसत्तटे। शुक्लध्यानेन कर्मारि-लोकालोकप्रकाशकम् ॥१९॥
 केवलज्ञानमुत्पाद्य भूत्वा त्रैलोक्यपूजितः। मुक्तिं संप्राप्तवान्स्वामी सोऽस्माकं शान्तयेस्तु वै ॥२०॥
 स श्रीमान्भवसिन्धुतारणपरः सत्केवलज्ञानभाक् कर्मारतिविनाशकृच्छिवपतिर्देवेन्द्रवृन्दार्चितः।
 लोकालोकविलोकनैकचतुरः स्वर्गापवर्गप्रदो भूयान्मे भवतां च पूजितपदः सच्छ्रेयसे श्रीजिनः ॥२१॥

इति कथाकोशे सुदृष्टेराख्यानं समाप्तम्।

७९. धर्मसिंहमुनेराख्यानम्

सर्वदेवेन्द्रचन्द्राद्यैर्वन्दितं श्रजिनेशिनम्। नत्वा श्रुताब्धिमाप्तं च धर्मसिंहकथां ब्रूवे ॥१॥
 दक्षिणादिपथे ख्याते कौशलादिगिरौ पुरे। वीरसेनो महीनाथो राज्ञी वीरमती सती ॥२॥
 चन्द्रभूतिस्तयोः पुत्रश्चन्द्रश्रीश्च सुताभवत्। रूपलावण्यसौभाग्यमण्डिता यौवनाश्रिता ॥३॥
 कौशलाख्ये तथा देशे पुरे कौशलनामनि। धर्मसिंहो महाराजस्तां कन्यां परिणीतवान् ॥४॥

इधर विमला के लड़के को भी अत्यन्त वैराग्य हुआ। वह स्वर्ग-मोक्ष के सुखों को देने वाली जिनदीक्षा लेकर योगी बन गया। यहाँ से फिर यह विशुद्धात्मा धर्मोपदेश के लिए अनेक शहरों में घूम-फिर कर तपस्या करता हुआ और अनेक भव्यजनों को आत्महित के मार्ग पर लगाता हुआ शौरीपुर के उत्तर भाग में यमुना के पवित्र किनारे पर आकर ठहरा। यहाँ शुक्लध्यान द्वारा कर्मों का नाश कर इसने लोकालोक का ज्ञान कराने वाला केवलज्ञान प्राप्त किया और संसार द्वारा पूज्य होकर अन्त में मुक्ति लाभ किया। वे विमला-सुत मुनि मुझे शान्ति दें ॥१७-२०॥

वे जिन भगवान् आप भव्यजनों को और मुझे मोक्ष का सुख दें, जो संसार-सिन्धु में डूबते हुए, असहाय-निराधार जीवों को पार करने वाले हैं, कर्म-शत्रुओं का नाश करने वाले हैं, संसार के सब पदार्थों को देखने वाले केवलज्ञान से युक्त हैं, सर्वज्ञ हैं, स्वर्ग तथा मोक्ष का सुख देने वाले हैं और देवों, विद्याधरों, चक्रवर्तियों आदि प्रायः सभी महापुरुषों से पूजा किए जाते हैं ॥२१॥

७९. धर्मसिंह मुनि की कथा

इस प्रकार के देवों द्वारा जो पूजा-स्तुति किए जाते हैं और ज्ञान के समुद्र हैं, उन जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर धर्मसिंह मुनि की कथा लिखी जाती है ॥१॥

दक्षिण देश के कौशलगिर नगर के राजा वीरसेन की रानी वीरमती के दो सन्तान थीं। एक पुत्र और एक कन्या थी। पुत्र का नाम चन्द्रभूति और कन्या का चन्द्रश्री था। चन्द्रश्री बड़ी सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता देखते ही बनती थी। कौशल देश और कौशल ही शहर के राजा धर्मसिंह के साथ चन्द्रश्री का विवाह हुआ था। दोनों दम्पति सुख से रहते थे। नाना प्रकार की भोगोपभोग वस्तुएँ सदा